‘मन्दिर में रहो-४’
का परिचय

नेएला मार्टिनेज़ तेहेदा द्वारा लिखित

मार्च २०२० में जब ‘मन्दिर में रहो’ सत्संग आरम्भ हुए तभी से लेकर, पाँच माह पश्चात् उनके समापन के बाद भी लम्बे समय तक, विश्वभर के सिद्धयोगी माता-पिता एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन को अद्‌भुत क़िस्से व अनुभव भेजते आ रहे हैं, कि इन सत्संगों में उनके बच्चे किस प्रकार श्रीगुरुमाई के साथ व सिद्धयोग के अभ्यासों के साथ जुड़ पाए हैं। उन किशोरों व युवाओं से भी अनुभव मिलते रहे हैं जिन्होंने श्री मुक्तानन्द आश्रम के भगवान नित्यानन्द मन्दिर से होने वाले इन ऐतिहासिक सीधे वीडिओ प्रसारणों में सेवा अर्पित की—बहुत बार इन युवाओं व किशोरों ने, विश्वभर में अपने-अपने घरों से सीधे वीडिओ प्रसारण के द्वारा जुड़कर अपनी सेवा अर्पित की है।

युवा सिद्धयोगियों ने जो अनमोल चीज़ें सीखीं—जो कि सिद्धयोग की धरोहर की रचना ही है—वे ‘मन्दिर में रहो-४’ के इन पृष्ठों पर दी जा रही हैं जिससे आप अनुभव कर पाएँगे कि ये सत्संग सचमुच कितने महत्त्वपूर्ण रहे हैं। ये सत्संग बच्चों व युवाओं के लिए असाधारण सुअवसर थे, जब वे वैश्विक हॉल के पवित्र वातावरण में रहकर साधना में संलग्न हो पाए, और अपने अनुभव व समझ को तेज़ी-से विकसित कर पाए। श्रीगुरुमाई ने कहा है कि हम बचपन में जो सीखते हैं, वह हमें जीवनभर याद रहता है।

‘मन्दिर में रहो’ सत्संगों में बच्चे गुरुमाई जी के साथ व बड़े बाबा के साथ जुड़ रहे थे—बड़े बाबा की मूर्ति हर एक सत्संग का विशेष केन्द्रण थी—और साथ ही बच्चे सिद्धयोग की सिखावनियों का श्रवण भी कर रहे थे। बच्चे, युवा और किशोर पावन स्तोत्रों का पाठ करना सीख रहे थे, नामसंकीर्तन गाना सीख रहे थे, अपने कौशल व प्रतिभा को अर्पित करना, आरती करना और प्रार्थना करना सीख रहे थे।

'मन्दिर में रहो-४' में संगीत की कुछ प्रस्तुतियाँ शामिल हैं जो युवा सिद्धयोगियों ने इन सत्संगों में की थीं, साथ ही सत्संग के वे अंश भी हैं जिनमें युवा, सेवा अर्पित करने के विषय में अपने अनुभव बता रहे हैं।

युवापीढ़ी और वयस्कों के बीच सीखने की जो प्रक्रिया होती है उसने हमेशा ही मुझे मोहित किया है। हम सभी एक-दूसरे से सीखते हैं। मेरे अपने बच्चों के साथ मेरा अनुभव है कि वे जिन छोटी-छोटी चीज़ों का अवलोकन करते हैं, उनमें अत्यन्त गहन ज्ञान निहित होता है।

अनेक बार ऐसा होता कि 'मन्दिर में रहो' सत्संग के बाद मैं अपने बेटों—छः वर्षीय जीवन और तीन वर्षीय लिओनार्डो—से पूछती, "*तुम्हारा* अनुभव क्या है?" आम तौर पर वे ऐसी चीज़ों के बारे में बताते जो उन्होंने देखी हों पर मेरा ध्यान उन चीज़ों पर गया ही न होता। जैसे, तरबूजों को रचनात्मक तरीक़े से काटकर उन पर बनाई हुई सुन्दर आकृतियाँ, बढ़िया-से रसीले आम और रंगबिरंगे फलों के ज्यूस, जो बड़े बाबा की मूर्ति के पास नैवेद्य के रूप में रखे होते, या फिर 'ज्योत से ज्योत जगाओ' आरती के समय जिन दीयों से आरती की जाती—तीन, नौ, या ग्यारह दीये जल रहे होते। [जब हम आरती गा रहे होते तब मेरे बेटे उन ज्योतियों को गिन रहे होते।]

मेरे बेटे जो चीज़ें देखते उनसे मेरा केन्द्रण उस सौन्दर्य पर और बारीकी से ध्यान देने पर आया जो कि पूजा-आराधना में होना चाहिए, और इसने मुझे याद दिलाया कि अपने जीवन के प्रत्येक क्षण में, मैं अपनी आत्मा का सर्वश्रेष्ठ और सबसे सुन्दर स्वरूप इस विश्व को अर्पित करना चाहती हूँ।

अपने बच्चों के नज़रिए से देखने के परिणामस्वरूप सत्संगों का मेरा अपना अनुभव भी ताज़ा हो गया। मुझे उन बारीकियों के बारे में सुनना अच्छा लगता जिन पर मैंने ग़ौर नहीं किया होता, और यह मुझे याद दिलाता कि मैं अपने मन को वर्तमान क्षण में बनाए रखूँ ताकि मैं अपने जीवन को और भी बेहतर रूप से, पूरी तरह से जी पाऊँ।

मुझमें यह जागरूकता आने लगी कि 'मन्दिर में रहो' सत्संगों में भाग लेने से मेरे बेटों को जो अनुभव हो रहे हैं वे स्मृतियों के संग्रह मात्र से कहीं बढ़कर हैं। मेरे बेटे इसी तरह सिद्धयोग पथ पर चलना सीख रहे हैं। हर नामसंकीर्तन के साथ, हर एक अनुभव, हर एक अभ्यास के साथ वे अपनी साधना को विकसित कर रहे हैं।

एक सत्संग में आरती के दौरान, मेरे बेटे जीवन को वह बात याद आ गई जो मैंने उसे एक बार बताई थी। श्री मुक्तानन्द आश्रम में अपनी संगीत सेवा में, मैं आरती के पहले नगाड़ा बजाती थी, वह बात उस बारे में थी। मैंने जीवन से कहा था कि संगीत सेवाकर्ता के रूप में मुझे सिखाया गया है कि नगाड़ा बजाते समय मैं यह वाक्य दोहराऊँ, "मेरा . . . मन . . .शिव . . . है" ताकि नगाड़ा बजाने की ताल और उसकी लय उचित बनी रहे। जब जीवन ने उस दिन 'मन्दिर में रहो' सत्संग में पहली बार आरती सुनी तब यह देखकर वह आनन्द से भर उठा कि नगाड़े की ताल इन शब्दों के साथ पूरी तरह से एकलय है, "मेरा . . . मन . . .शिव . . . है।" तुरन्त ही वह इस वाक्य को दोहराने लगा और अपने सीने पर थाप देने लगा मानो वह स्वयं मन्दिर में बड़े बाबा के लिए नगाड़ा बजा रहा हो। और उसके लिए तो यह सच ही था, वह बड़े बाबा के लिए बजा रहा था।

मैं आपको आमन्त्रित करती हूँ कि आप 'मन्दिर में रहो-४' में दिए गए प्रसंगों और अनुभवों का अन्वेषण करें और इस प्रकार मासूम आँखों से की गई विस्मयकारी खोज का आनन्द अनुभव करें। बच्चों और युवाओं के नज़रिए से इन असाधारण सत्संगों को अनुभव करने से आप स्वयं अपनी साधना के लिए और भी महान उत्साह का विकास कर पाएँगे, और यह विश्वास कर पाएँगे कि भविष्य भले हाथों में है।

©२०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।